पाठ 15 अंधेर नगरी

लेखक - भारतेंदु हरिश्चंद्र

भिच्छा - भिक्षा, भीख

भोग - भगवान को अर्पित किया जाने वाला भोजन

शालिग्राम - काले रंग का छोटा गोल पत्थर जिसे विष्णु मानकर पूजा जाता है

लोभ - लालच

निदान - परिणाम

हाकिम - अफसर

टिक्स - टैक्स,कर

मूल - जड़

सेर - एक पुरानी तोल (आज के लगभग 800 ग्राम के बराबर)

सीधा - ब्राह्मणों को दी जाने वाली कच्ची खाद्य सामग्री

टका - दो पैसे का सिक्का

मिटावत - मिटाता है

मान - मर्यादा, प्रतिष्ठा, सम्मान

भूर - बेसन

खाजा - खजला (मैदे से बनी एक प्रकार की मिठाई)

अमला - कर्मचारी वर्ग

अकिल - अक्ल/समझ

अजीरन - अजीर्ण, अपच रोग

एडिटर - संपादक

कुंजडिन - सब्जी बेचने वाली

मुरई - मूली

निनुआ - तोरी, तुरई

मसकरी - मजाक

छक जाना - तृप्त हो जाना

छन - क्षण

बाजे-बाजे - किसी-किसी

उपवास, व्रत

स्मरण - याद

फरियादी - प्रार्थी/गुहार लगाने वाला

नेपथ्य - पर्दे के पीछे

न्याव - न्याय

बोदा - कमजोर

आशना - प्रिय

भिश्ती - पानी वाला

मशक - पानी भरने का चमड़े का थैला

दरबार बर्खास्त - सभा समाप्त

ढेर - बहुत सारा

सवारी - जुलूस की शक्ल में निकलना

धूम से - शान से

इंतजाम के वास्ते - प्रबंध करने के लिए

बर्खास्त - समाप्त

अरण्य - जंगल, वन

सांची - सच्चे व्यक्ति

छली - छल करने वाला

पनही - जूती

एका - एकता

नाहक - व्यर्थ में साधना चबाना

प्यादा - सिपाही

दुर्दशा - बुरी स्थिति

अर्ज करना - निवेदन करना

माजरा - मामला

साइत - मुहूर्त, शुभ घड़ी

हुकुम - आदेश

आफत - संकट

हुज्जत - बहस करना

सबब - कारण

बैकुंठ - स्वर्ग

सुजन - सज्जन

आप ही अपने आप

नसै - नष्ट होते हैं

चौपट राज - मूर्ख और अयोग्य राज

टिकठी - फाँसी का तख्ता